हिन्दी विभाग
राजीव गाँधी विश्वविद्यालय
(संक्षिप्त परिचय)

अपनी अप्रतिम प्राकृतिक सुषमा के लिये विख्यात अरुणाचल प्रदेश के दोइमुख नामक स्थान पर एक लघु गिरि-श्रृंग (रोनो हिल्स) पर अवस्थित राजीव गाँधी (केन्द्रीय) विश्वविद्यालय की स्थापना सन् 1984 में हुई। 1999 ई में यहाँ हिन्दी विभाग खुला जिसने अल्पकाल में ही अत्यन्त प्रतिष्ठा अर्जित की है। बहुआयामी प्रतिभा के धनी नौ संकाय सदस्यों तथा एम.ए., पी-एच.डी., एम.फिल., प्रयोजनमूलक हिन्दी में स्नातकोत्तर डिप्लोमा में अध्ययन एवं शोधरत डेढ़ सौ से भी अधिक छात्र-छात्राओं से सुसमृद्ध यह विभाग वर्तमान में पूर्वोत्तर का सबसे बड़ा हिन्दी विभाग है। जहाँ से हिन्दी में एक अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका 'अरुण प्रभा' का भी प्रकाशन होता है। यहाँ तक पहुँचने के लिये असम के गुवाहाटी महानगर से हैलीकॉप्टर के अतिरिक्त रेल एवं बस सेवा भी उपलब्ध है। जिसके द्वारा 7-8 घण्टों में पहुँचा जा सकता है। बस से आने पर निकटम स्थान निर्जुली है तथा रेलगाड़ी से आने पर गमतो सर्वाधिक निकटतम रेलवे स्टेशन है। सप्ताह में दो दिन अर्थात् रविवार एवं गुरुवार को दिल्ली से सीधी रेलगाड़ी भी उपलब्ध है जो अरुणाचल स्थित नाहरलागुन रेलवे स्टेशन पर क्रमश: मंगल एवं शनिवार को पहुँचती है तथा उसी दिन रात को वापस जाती है।

संरक्षक :

प्रो. साकेत कुशवाहा
कुलपति, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय

प्रो. हरीशकुमार शर्मा
भाषा संकायाध्यक्ष

प्रो. ओकेन लेगो
अध्यक्ष, हिंदी विभाग एवं समन्वयक

डॉ. सत्यप्रकाश पाल
संयोजक

डॉ. राजीव रंजन प्रसाद
सह–संयोजक

सदस्य

डॉ. श्याम शंकर सिंह
डॉ. जोराम यालाम नाबाम
डॉ. जमुना बीनी तादर
डॉ. अभिषेक कुमार यादव
डॉ. विश्वजीत कुमार मिश्र

ICPR

दो दिवसीय
राष्ट्रीय संगोष्ठी

पूर्वोत्तर भारत की जनजातियों का दर्शन एवं संस्कृति

15-16 नवम्बर, 2018

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली और हिन्दी विभाग, राजीव गांधी विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित

संपर्क :

**हिंदी विभाग
राजीव गाँधी विश्वविद्यालय
रोनो हिल्स, दोइमुख
अरुणाचल प्रदेश-791 112**

ई. मेल : hindiseminarrgu@gmail.com

पूर्वोत्तर भारत की जनजातियों का दर्शन एवं संस्कृति

भारत के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों की तरह उसका पूर्वोत्तर क्षेत्र भी अपनी कुछ निजी विशिष्टताएं रखता है। आठ राज्यों के इस भू-भाग की एक क्षेत्रीय इकाई के रूप में समेकित पहचान होते हुए भी यह वैविध्य-सम्पन्न है और भारत के सम्बन्ध में प्रचलित 'अनेकता में एकता' की धारणा को चरितार्थ करता है। यह भू-भाग भारत की बहुशः जनजातियों का बसेरा है। यहाँ के प्रत्येक राज्य में अनेकानेक जनजातियाँ निवास करती हैं जिनकी अपनी-अपनी मान्यताएँ हैं, विश्वास हैं, जीवन-शैलियाँ हैं तथा धर्म-संस्कृति, साहित्य एवं दर्शनगत उपलब्धियाँ हैं। विभेद होने के बावजूद सभी में ऐसा कुछ साझा भी है जो उन्हें एक समन्वित सामूहिक पहचान दे जाता है जिसके कारण इस क्षेत्र को एक इकाई के रूप चिह्नित किया जाता है। इतना ही नहीं, अपनी निजी विशेषता रखते हुए भी यह क्षेत्र भारतीयता की मुख्यधारा से बहुत दूर नहीं पड़ता और उसमें भी अपना एक विशेष योगदान देता दिखायी पड़ता है।

दर्शन एवं संस्कृति का आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध है। किसी समाज के मूल चरित्र को जानने के लिये, उसके जीवन-दर्शन एवं संस्कृति को समझने के लिये उस समाज विशेष का साहित्य एवं कलाएँ एक अच्छा माध्यम (स्रोत) होते हैं। पूर्वोत्तर भारत के मध्य भारत से सम्बन्ध शताब्दियों से नहीं, सहस्त्राब्दियों से हैं। अतः यहाँ के दर्शन एवं संस्कृति पर उसकी छाप भी देखने को मिलती है और उसका अपना एक निजी स्वरूप भी सामने आता है। व्यष्टि के बजाय समष्टि के लिये जीने का भाव, प्रकृति के प्रति कृतज्ञता-प्रेरित पूज्य-भाव, आत्माओं में विश्वास, विभिन्न प्रकार की वर्जनाएँ आदि जैसी अनेकानेक आन्तरिक विशेषताएँ जहाँ इस क्षेत्र में निवास करने वाली जनजातियों को एक समग्र भारतीय जीवन-परम्परा से जोड़ती हैं, तो खान-पान, रहन-सहन, पहनावा, जीविकोपार्जन की विधियाँ जैसी जीवन-शैली की अन्य अनेक बाह्य विशेषताएँ अपनी निजता लिये हुए दिखायी पड़ती हैं।

समय के साथ-साथ पूर्वोत्तर की जनजातियों में बहुत बदलाव आया है और इसका असर उनके परम्परागत दर्शन एवं संस्कृति पर भी पड़ा है।

प्रस्तावित संगोष्ठी का विषय इसी दृष्टि से विचार के लिए रखा गया है कि कहीं बदलाव के आकर्षण में हम कुछ ऐसा तो नहीं छोड़ रहे हैं जो हमारे लिये आज भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है। लेकिन खेद की बात यह है कि पूर्वोत्तर के बारे में पूर्वोत्तर से बाहर के लोगों को बहुत जानकारी नहीं है। यह संगोष्ठी पूर्वोत्तर भारत में निवास करने वाली जनजातियों के दर्शन एवं संस्कृति के माध्यम से उनको जानने-समझने के एक प्रयास के रूप में होगी इससे उनके दर्शन एवं संस्कृति के सभी पहलुओं पर समग्रता से विचार कर पारम्परिक जीवन में अवदान पर तो विचार हो सकेगी, वर्तमान में भी उनके उपयोगी-अनुपयोगी तत्वों को रेखांकित किया जा सकेगा।

संगोष्ठी के लिये शोध-पत्र तैयार करने हेतु कुछ उपविषय भी साथ में दिये जा रहे हैं जिन पर या मूल विषय से जुड़े हुए अन्य प्रासंगिक विषयों पर विभिन्न जनजातियों के सम्बन्ध में प्रपत्र तैयार किये जा सकते हैं:

i. जनजातीय न्याय प्रणाली और उसका दार्शनिक आधार

ii. पूर्वोत्तर भारत की संस्कृति अतीत और वर्तमान।

iii. पूर्वोत्तर भारतीय दर्शन के प्रासंगिक-अप्रासंगिक पहलू

iv. दर्शन एवं संस्कृति : वैविध्य एवं व्यापकत्व

v. भारतीय संस्कृति का सर्वसमावेशी स्वरूप एवं पूर्वोत्तर की संस्कृति: अनेकता में एकता का सूत्र।

vi. भारतीयता की अवधारणा और पूर्वोत्तर भारतीय दर्शन एवं संस्कृति।

Vii. पूर्वोत्तर भारत: लोक दर्शन एवं लोक संस्कृति

Viii. पूर्वोत्तर भारत का साहित्य और संस्कृति।

ix. पूर्वोत्तर भारत के साहित्य के दार्शनिक पक्ष।

x. पूर्वोत्तर भारत की कलाओं में दार्शनिक अभिव्यक्ति

xi. पूर्वोत्तर भारत की कलाएं और सांस्कृतिक झाँकी।

xii. पूर्वोत्तर भारत : जीवन और जीवन-दर्शन।

xiii. पूर्वोत्तर भारत का साहित्य और दर्शन ।

xiv. पूर्वोत्तर भारत : लोक साहित्य और लोकदर्शन

xv. धर्मोपासना सम्बन्धी वैशिष्टय एवं चिन्तन

xvi. जीवन-शैली सम्बन्धी विशिष्टताएँ और उनके दार्शनिक आधार

xvii. जनजातीय लोक-विश्वास एवं लोक-जीवन के मूल्यादर्श

शोध सारांशिका भेजने की
अंतिम तिथि : 25 अक्टूबर, 2018
शोध आलेख भेजने की
अंतिम तिथि : 5 नवम्बर, 2018

ई. मेल : hindiseminarrgu@gmail.com

शोध आलेख कृतिदेव–10 में अधिकतम 1500 भाब्दों में भेजना अनिवार्य है।

सम्पर्क सूत्र
मो. : 08413985866, 09436848281